RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-02
February -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

सामाजिक विकास के सन्दर्भ में गांधीजी की प्राथमिक अथवा बुनियादी शिक्षा की उपादेयता

निधि तिवारी

असि0प्रो0–समाज शास्त्र विभाग करामत हुसैन महिला पी0जी0 कालेज लखनउ,(उ0प्र0)

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में अहम भूमिका निभाई। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने एक वैकल्पिक मॉडल का सूत्रपात किया, जिसे बुनियादी शिक्षा के नाम से जाना जाता है। इसका जिक्र उनकी किताब वर्धा की शिक्षा योजना या नई तालीम में मिलता है। शिक्षा के क्षेत्र में आज भी इन विचारों का महत्व ज्यों का त्यों बना हुआ है। उनको स्वीकार करने के लिए अलग शब्दों का चुनाव भले ही कर लिया गया हो, मगर उनकी मूल आत्मा वही है। अविनाशलिंगम के शब्दों में ''बुनियादी शिक्षा हमारे राष्ट्रपिता का अंतिम और संभवतः महानतम् उपहार है।''सन् 1937 में गांधीजी ने वर्धा में हो रहे 'अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन' जिसे 'वर्धा शिक्षा सम्मेलन' कहा गया था। उसमें अपनी बेसिक शिक्षा की नयी योजना को प्रस्तुत किया। जो कि मेट्रिक स्तर तक अंग्रेजी रहित तथा उद्योगों पर आधारित थी। जामिया मिलिया के तत्कालिक प्रिंसिपल डॉ॰ जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में 'जाकिर हुसैन समिति' का निर्माण किया गया तथा गांधीजी के शिक्षा संबंधी विद्यायें तथा सम्मेलन द्वारा पारित किये गये प्रस्तावों के आधार पर 'नई तालिम' (बुनियादी शिक्षा) की योजना तैयार की गई। तथा 1938 में हरिपुर के अधिवेशन ने इन रिपोर्ट को स्वीकृति दी। जो कि 'वर्धा–शिक्षा–योजना' के नाम से प्रसिद्ध हुआ और बुनियादी शिक्षा का आधार है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का व्यक्तित्व और कृतित्व आदर्शवादी रहा है। उनका आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओतप्रोत था। संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं। पर उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक मत्वपूर्ण योगदान होता है। उनका मूलमंत्र था – 'शोषण–विहीन समाज की स्थापना करना'। उसके लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है। अतः गांधीजी ने जो शिक्षा के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों की व्याख्या की तथा प्रारंभिक शिक्षा योजना उनके शिक्षादर्शन का मूर्त रूप है। अतएव उनका शिक्षादर्शन उनको एक शिक्षाशास्त्री के रूप में भी समाज के सामने प्रस्तुत करता है। उनका शिक्षा के प्रति जो योगदान था वह अद्वितीय था। उनका मानना था कि मेरे प्रिय भारत के बच्चों को उपयोगी शिक्षा शिक्षा दी जावे। शिक्षा उन्हें स्वावलंबी बनाये और वे देश को मतबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

गांधीजी ने शिक्षा के अधोलिखित आधारभूत सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है–

(1) 7 से 14 वर्ष की आयु के बालकों की निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा हो॰
(2) शिक्षा के माध्यम से बालक के मानवीय गुणों का विकास करना है।
(3) साक्षरता को शिक्षा नहीं कहा जा सकता।
(4) शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
(5) शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक के शरीर, हृदय, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास हो।
(6) सभी विषयों की शिक्षा स्थानीय उत्पादन उद्योगों के माध्यम से दी जाए।
(7) शिक्षा ऐसी हो जो नवयुवकों को बेरोजगारी से मुक्त कर सके।

गांधीजी के अनुसार शिक्षा का अर्थ – बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में जाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुंमुखी विकास करना है। अतः बालक के सर्वांगीण विकास हेतु उसके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक गुणों का विकास करना। महात्मा गाँधी औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था को भारत के लिए हानिकारकमानते थे। गाँधी जी ने अंग्रेजों द्वारा विकसित शिक्षा पद्धति की तीन महत्वपूर्णकमियाँ बताई–

1.यह विदेशी संस्कृति पर आधारित थी, जिसने स्थानीय संस्कृति लगभग समाप्त कर दी थी।
2.यह हृदय और हाथ की संस्कृति की उपेक्षा कर पूर्णतः दिमाग तक ही सीमित रहता है।
3.विदेशी भाषा के माध्यम से सही शिक्षा संभव नहीं है।
4.गाँधी जी ने अंग्रेजी शिक्षा को मानसिक गुलामी का कारण बताया। वे कहते है ''अंग्रेजी शिक्षा लेकर हमने अपने राष्ट्र को गुलाम बनाया है। अंग्रेजी शिक्षा से दंभ, राग, जुल्म वगैरह बढ़े है।''

अतः गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन के दौरान सरकारी शैक्षिक संस्थाओ के बहिष्कार का आह्वान किया।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

औपनिवेशिक शिक्षा की जगह उन्होंने एक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास का प्रयास किया जो मानव श्रम को उसका उचित स्थान देते हुए संवेदनशील हृदय तथा मस्तिष्क का समन्वितविकास कर सके।

महात्मा गांधी का इस बात में गहरा विश्वास था कि इंसान के जीवन का अंतिम लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति करना है। आदर्श समाज के बारे में उनका दावा था कि जहाँ 'समता' होगी, शक्तिशाली का कमज़ोर के ऊपर प्रभुत्व या ग़रीब का शोषण नहीं होगा। वह नैतिक सिद्धांतो और परोपकार की भावना पर आधारित समाज की कल्पना का आदर्श स्थापित करना चाहते थे। उनके यह विचार शिक्षा संबंधी उनके विश्वासों में भी पूर्णतयः परिलक्षित होता है।

गांधीवादी शिक्षा की अवधारणा है कि 'बच्चों और इंसानों के शरीर, मन और आत्मा के सर्वोत्तम की अभिव्यक्ति.' यहां सर्वोत्तम की अभिव्यक्ति से गांधी जी का तात्यपर्य था कि सच्चाई की आंतरिक आवाज़ मुखर हो। इसके अलावा गांधी मानते थे कि सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों के आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक पहलुओं को उभारती है और प्रेरित करती है। इस तरीके से हम सार के रूप में कह सकते हैं कि उनके मुताबिक़ शिक्षा का अर्थ सर्वांगीण विकास था।गान्धी जी ने शिक्षा के दो उद्देश्यों की बात कही तात्कालिक और दूरगामी। तात्कालिक उद्देश्यों में उन्होंने रोज़ी–रोटी के लक्ष्यों, सांस्कृतिक उद्देश्यों, सभी शक्तियों के संभावित विकास, चरित्र निर्माण और स्वतंत्रता की बात कही। जबकि दूरगामी लक्ष्य जीवन के अन्तिम लक्ष्य से संबंधित है जो आत्मबोध, 'सच्चाई' और 'ईश्वर' का ज्ञान प्राप्त करना है।

गांधी जी मानते थे कि शिक्षा हमें आत्मनिर्भर बनाने वाली होनी चाहिए। जिससे यह बेरोज़गारी का सामना करने में सक्षम बनाए। शिक्षा को इस तरीके का प्रशिक्षण प्रदान करने का माध्यम होना चाहिए ताकि भावी जीवन में यह बच्चों को अपनी आजीविका का प्रबन्ध करने में सक्षम बनाती हो। उनके मुताबिक़, "14 साल की उम्र में बच्चे को कमाने वाली इकाई में के रूप में सात सालों का कोर्स पूरा होने के बाद मुक्त कर देना चाहिए।"

शिक्षा में विकल्प की तलाश :

गांधी जी ने शिक्षा के व्यावसायिक पक्ष पर काफ़ी ज़ोर दिया, जिसे लागू करने का प्रयास आज के पाठ्यक्रम निर्माता भी कर रहे हैं। 'बचपन' के बारे में उनके सरोकार का केंद्र बच्चों का मूल स्वभाव था कि वह कैसे सीखता है और उसकी बुनियादी आवश्यकताएं क्या हैं, यह सभी मिलकर आज की समसामयिक बाल–केंद्रित शिक्षा का निर्माण करते हैं। सृजनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में शिल्प को दिया गया महत्व और श्रम को महत्व देने वाले नज़रिए के निर्माण को प्रशिक्षकों द्वारा आज भी महत्व दिया जाता है। वास्तव में सामाजिक रूप से उपयोगी और उत्पादक कार्य जो स्कूल पाठ्यक्रम का एक हिस्सा है उसमें इन उद्देश्यों को संक्षेप में शामिल किया गया है। शिक्षा की वैश्विकता में ख़ासतौर पर बच्चों का सम्मान करने के संदर्भ में उनका विश्वास था। आज भी शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों का चहुँमुखी विकास करना है। गांधी जी बच्चे की नैसर्गिक अच्छाई में यक़ीन रखते थे, चीज़ों को करके सीखने पर ज़ोर देते थे, साथ ही बनावटीपन और आडंबर के विरोधी थे। उन्होंने शिक्षा को चहारदीवारी से मुक्त कराने का प्रयास किया और चाहते थे कि बच्चे के प्राकृतिक परिवेश में शिक्षा दी जानी चाहिए। वह मानते थे कि बच्चों को शिक्षा स्वतंत्रता के माहौल में दी जानी चाहिए। संक्षेप में कहा जा सकता है कि आज की आधुनिक, बाल–केंद्रित और मानवतावादी शिक्षण के सरोकार भी यही हैं।

उनका विचार था कि शिक्षा का बुनियादी उद्देश्य बच्चे का सर्वांगीण विकास करना है। गांधी महसूस करते थे कि शिक्षा में में नैतिक आग्रहों का समावेश अवश्य होना चाहिए, इसके तहत उसे सभी बच्चों के चरित्र निर्माण का साधन बनना चाहिए। इससे अतिरिक्त उन्होंने ख़ासतौर पर बच्चों में शांति और नेतृत्व के लिए शिक्षा देने की बात कही। उन्होंने यह भी महसूस किया कि शिक्षा हमें स्वतंत्रता का अहसास कराने वाली होनी चाहिए। गांधी जी का तात्कालिक शिक्षा व्यवस्था से मोहभंग हो चुका था जिसके बारे में उनका विचार था कि वह प्रकृति में बहुत ज़्यादा साहित्यिक और किताबी थी। इसके विकल्प के बतौर उन्होंने शिल्प–केंद्रित शिक्षा का प्रस्ताव किया। इसे औपचारिक तौर पर बर्धा की बुनियादी शिक्षा के रूप में पेश किया गया था।

कई आधुनिक शिक्षाविदों ने गांधी की तरफ़ से प्रस्तावित बुनियादी शिक्षा की योजना को आप्रासंगिक बताया और राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्यता के सवाल पर यह आलोचना के केंद्र में आ गई। हालांकि गांधी जी के शैक्षणिक विचारों का शिक्षा के आधुनिक संदर्भों में भी काफ़ी महत्व है। उनके सिद्धांतों के मूल में बच्चों की प्रतिभा का विकास और वृद्धि थी। उन्होंने उद्देश्यपूर्ण और उत्पादक शारीरिक गतिबिधि के बच्चों पर होने वाले असर को देखा था, उनकी सृजनात्मक और आत्म–अभिव्यक्ति की आवश्यकताओं को वह समझते थे। गांधी जी अनुभवों की समग्रता और सीखने–सिखाने की सामाजिक और भावनात्मक महत्व से अवगत थे। आज के शिक्षाविदों के लिए भी यह सारे विचार अनुकरणीय हैं।

गांधीजी का शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष योगदान रहा है। उनका मूलमंत्र था – 'शोषण–विहीन समाज की स्थापना करना'। उसके लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है। अतः गांधीजी ने जो शिक्षा के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों की व्याख्या की तथा प्रारंभिक शिक्षा योजना उनके शिक्षादर्शन का मूर्त रूप है। अतएव उनका शिक्षादर्शन उनको एक शिक्षाशास्त्री के रूप में भी समाज के सामने प्रस्तुत करता है। उनका शिक्षा के प्रति जो योगदान था वह अद्वितीय था। शिक्षा उन्हें स्वावलंबी बनाये

RRIJM 2015, All Rights Reserved

और वे देश को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। चूंकि बुनियादी शिक्षा राष्ट्रीय सभ्यता, संस्कृति के नजदीक

थी, साथ ही साथ सामुदायिक जीवन के आधारभूत व्यवसायों से जुड़ी हुईथी। तथा सीखे हुए आधारभूत शिल्प के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन का निर्वाह कर सकता था। अतः यह शिक्षा हमारे जीवन के बुनियाद या आधार से जुड़ी हुई थी इसलिए इसका नाम बुनियादी या आधारभूत शिक्षा रखा गया। गांधी जी ने बुनियादी शिक्षा के पाठ्क्रम के अंतर्गत आधारभूत शिल्प जैसेः कृषि, कताई–बुनाई, लकड़ी, चमड़े, मिट्टी का काम, पुस्तक कला, मछली पालन, फल व सब्जी की बागवानी, बालिकाओं हेतु गृहविज्ञान तथा स्थानीय एवं भौगोलिक आवश्यकताओं के अनुकूल शिक्षाप्रद हस्तशिल्प इसके अलावा मातृभाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं सामान्य विज्ञान, कला, हिंदी, शारीरिक शिक्षा आदि रखा। शिक्षण विधि को शिक्षण का वास्तविक कार्य–क्रियाओं और अनुभवों पर अनिवार्य रूप से आधारित किया।

उनके अनुसार शिक्षण विधि व्यावहारिक हो। बालकों को विभिन्न विषयों की शिक्षा किसी आधारभूत शिल्प के माध्यम से दी जाए। करके सीखना, अनुभव द्वारा सीखना तथा क्रिया के माध्यम से सीखने पर बल दिया गया। गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा में सीखने की समवाय पद्धति का उपयोग किया। जिसक अंतर्गत उन्होंने समस्त विषयों की शिक्षा किसी कार्य या हस्तशिल्प के माध्यम से दी। गांधीजी की शिक्षा संबंधी विचारधारा की प्रासंगिकता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपर्युक्त व्याख्या का मूल्यांकन किया जाए तो इस तथ्य पर पहुंचते हैं कि गांधीजी का शिक्षादर्शन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक है।

सर्वप्रथम गांधीजी द्वारा भारतीय जीवन को दृष्टिगत रखते हुए वातावरण के अनुसार ऐसी शिक्षा योजना प्रस्तुत किया गया जिसको कार्यरूप में परिणत करने में भारतीय समाज में एक नया जीवन आने की संभावना है। गांधीजी हृदय से आदर्शवादी थे क्योंकि वे जीवन के अंतिम लक्ष्य सत्य को प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान करता है। गांधीजी को प्रयोजनवादी भी कह सकते हैं, क्योंकि वे बालक की रुचि के अनुसार क्रिया करके सीखने पर बल देते हैं। उनको प्रकृतिवादी इसलिये कह सकते हैं कि वे बालक को उसकी प्रकृति के अनुसार विकसित करना चाहते थे। ध्यान देने वाली बात यह है कि उनके शिक्षादर्शन में तीनों विचारधाराओं में कोई विशेष अर्थ नहीं था। गांधीजी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के सिद्धांत जैसे बालकों एवं बालिकाओं को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दिया जाए। आज हम देखते हैं देश के समस्त वर्गों को शिक्षित करने करने हेतु कई तरह के प्रयास किए जा रहे हैं। निःशुल्क, अनिवार्य शिक्षा साथ ही साथ बालकों एवं बालिकाओं के लिए कई योजनाओं का निर्माण किया गया है। ताकि अधिक से अधिक बालकों को शिक्षा की प्राप्ति हो सके। वर्तमान में हम देखते हैं कि आज युवाओं के पास कई तरह की डिग्री है परंतु रोजगार नहीं है। अतः गांधीजी ने बहुत वर्ष पहले ही इस समस्या को इंगित कर दिया था और उन्होंने बुनियादी शिक्षा के अंतर्गत उद्योगों पर आधारित शिक्षा पर बल दिया ताकि बालक किसी न किसी हस्तशिल्प को सीखकर आत्मनिर्भर बन सके। बेरोजगारी से मुक्ति प्राप्त कर सके। वर्तमान में अब व्यवहारिक शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा को बल दिया जा रहा है। गांधी जी बालकों में मानवीय गुणों का विकास करने पर बल देते थे।जिसकी आज भी प्रासंगिकता है क्योंकि आज जो विनाश और तबाही फैल रही है वह मनुष्यों में मानवता की कमी के कारण बढ़ती जा रही है। गांधीजी ने करके या क्रिया द्वारा सीखने पर बल दिया है जो कि आज भी उतना ही आवश्यक है क्योंकि क्रिया या स्वयं करके सीखने पर सीखा हुआ ज्ञान स्थाई होता है जो हर क्षेत्र के लिए आवश्यक है। गांधीजी ने शारीरिक श्रम का सम्मान किया। उनके अनुसार मनुष्य को अपना कार्य स्वयं करना चाहिए। किसी पर निर्भर नहीं होना चाहिए। साथ ही साथ भेदभाव भी मिटता है। जो आज के परिप्रेक्ष्य में भी आवश्यक है। जो काम का आदर करेगा वही उत्पादन कार्य से जुड़ सकता है। गांधीजी के द्वारा दिये गये आर्थिक, नैतिक, सांस्कृतिक, नागरिकता का उद्देश्य साथ ही साथ सर्वोदय समाज की स्थापना जिसके अंतर्गत श्रम का महत्व होगा, धन का नहीं, स्नेह और सहयोग की भावनाएं होंगी, घृणा एवं पृथकता नहीं, शोषण के स्थान पर परहित एवं संचय की प्रवृत्ति के स्थान पर त्याग की प्रवृत्ति होगी। वर्तमान में शोषण, घृणा, स्वार्थ सिद्धि जैसे कुधारणा के कारण मारकाट, विनाश तथा मानवता का हनन हो रहा है। अतः हम कह सकते हैं कि गांधीजी की सर्वोदय समाज की स्थापना का उद्देश्य आज आवश्यक बन गया है। गांधीजी ने धर्म की शिक्षा का भी बहिष्कार किया। क्योंकि उन्हें भय था कि जिन धर्मों की शिक्षा दी जाती है अथवा पालन किया जाता है वे मेल के स्थान पर झगड़े उत्पन्न करते हैं। वर्तमान स्थिति भी इस बात की समर्थक है।

अतएव गांधीजी के द्वारा दिये गये शिक्षा के सिद्धांत, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षणविधि आज भी बालकों तथा बालिकाओं, विद्यालय तथा समाज के लिए उतने ही आवश्यक है जितने पहले उनकी महत्वपूर्ण कृति बुनियादी शिक्षा अथवा बेसिक शिक्षा बच्चों को, चाहे वे नगरों के हों या ग्रामों के, समस्त सर्वोत्तम एवं स्थाई बातों से संबंध रखती है। एवं बालकों को स्वावलम्बी बनाने में मददगार सिद्ध हुई है। उनकी शिक्षा केवल मानसिक विकास की ओर ही ध्यान नहीं देती बल्कि शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिये भी उयोगी हुई है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सन्दर्भ :

1. त्रिपाठी, कमलापति : स्वतंत्रता आंदोलन और उसके बाद, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 1988, पृ. 5,6.
2. प्यारे लाल : पूर्णाहुति, चतुर्थ खण्ड, पृ. 486.
3. स्पीचेजेस एण्ड राइटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी, जी.ए. नेटसन, मद्रास, 1934, पृ. 718.
4. यंग इण्डिया, 5 मार्च, 1925.
5. यंग इण्डिया, 20 जनवरी, 1927
6. गांधी, एम.के. : ऐथेकिल रिलीजन, गनेशन, मद्रास, 1922, पृ. 35.
7. गांधी, एम.के. : इण्डिया माई ड्रीम्स (कम्पाइल्ड बाई प्रभु, आर.के.) अहमदाबाद, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, जनवरी, 1959, पृ. 11.
8. हरिजन, 25 मार्च, 1939. 25 यंग इण्डिया, 26 मार्च, 1931. रामनाथ सुमन, गाँधीवाद की रूपरेखा, साधना सदन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण, 1951, पृ. 78.
9. विश्व प्रकाश गुप्त, मोहिनी गुप्त, महात्मा गांधी : व्यक्ति और विचार, नई दिल्ली, 2006, पृ. 181.
10. गाँधी संस्मरण और विचार, गाँधी शत–संवतसरी के उपलक्ष मे ं 1966 में प्रकाशित "गाँधी व्यक्तित्व विचार और प्रभाव" श्रृंखला का नया प्रकाशन, 1968, गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान तथा सस्ता साहित्य मण्डल का संयुक्त प्रकाशन, देखें – प्रस्तावना

RRIJM 2015, All Rights Reserved